B.A.-1st
Paper- First

Pol.sc

Comparative Government and Politics

प्रश्न:— फ्रांस के पंचम गणराज्य के संविधान की विशेषताओं का उल्लेख करें।
(Main feature of French (फ्रांस) Constitution)

पाँचवें गणतंत्र का संविधान राष्ट्रपति डिगॉल की (Charles De Gaulle) के मस्तिष्क की देन है। इसे डि गॉल संविधान भी कहा जाता है क्यों कि इसमें गणतंत्रवाद तथा बोनापार्टवाद का अद्भुत मिश्रण देखा जा सकता है।

प्रमुख आधुनिक व्यवस्थाओं के अध्ययन में फ्रांस की शासन व्यवस्था को शामिल करने के कुछ प्रबल कारण हैं। यह वह देश है जहाँ के लोगों ने 1789 ई० में स्वतंत्रता, समानता, व बन्धुता के नारे लगाये तथा उनकी राष्ट्रीय सभा ने मानव व उनके अधिकारों की घोषणा (Declaration of the Rights of Man and Citizen) पारित की। इस क्रांति ने निरंकुश राजतंत्र को समाप्त करके गणतंत्रीय व्यवस्था स्थापित की और इस प्रकार यहाँ ब्रिटेन और अमेरिका की तरह प्रतिनिधि लोकतंत्र का आगमन हुआ। कुछ समय के पश्चात नेपोलियन बोनापार्ट ने इस व्यवस्था को पलट दिया फिर बोर्बोन के राजतंत्र की बहाली हुयी। फ्रांस की जनता एक सबल कार्यपालिका तथा सबल संसद की व्यवस्था बनाने में उलझे रहे जिसके कारण पुराने संविधान के स्थान पर नये संविधान आते चले गये। प्रथम गणतंत्र 1792 से 1799 तक चला, दूसरा गणतंत्र 1848 से 1851 तक चला, तीसरा गणतंत्र 1870 से 1940 तक चला, चौथा गणतंत्र 1946 से 1958 तक चला और अब पाँचवा गणतंत्र जिसकी स्थापना 1958 में उस समय के राष्ट्रपति "चार्ल्स डि गॉल" (Charles De Gaulle) ने किया। 1789 के हिंसात्मक क्रान्ति से फ्रांस ने 16 संविधानों को देखा। इन घटनाओं ने यह उजागर किया कि फ्रांस की जनता ने अन्त में राजतंत्र की जगह गणतंत्र को ही पसन्द किया।

पाँचवा गणतंत्र जब अस्तित्व में आया तो नये-नये पदबन्धों को गढ़ा गया जैसे- जनरल डि गॉल द्वारा रचित "प्रतिमान", "संसदीय सामाज्य", "एक अनवरत दस्तावेज" आदि। फ्रांस के पंचम गणतंत्र के संविधान की प्रमुख विशेषताओं को हम निम्नलिखित रूप में व्यक्त कर सकते हैं।

1. प्रस्तावना :— इस संविधान की शुरुआत 1946 ई० की प्रस्तावना से शुरू हुआ। 1946 ई० की प्रस्तावना के सभी मूलतत्व इस प्रस्तावना में निहित है। इस संविधान में अधिकारों या सार्वभौमिकता सम्बन्धी सिद्धान्तों का निरूपण नहीं

नहीं की गयी है, बल्कि 1946 ई० के संविधान द्वारा अपनाये गये सिद्धान्तों को स्वीकार किया गया है।

2. संकट काल का शिशु :— इस संविधान को संकट काल का शिशु कहा जाता है। फ्रांस के पंचम गणतंत्र का निर्माण ऐसे समय में हुआ जब फ्रांस पर राजनीतिक संकट के बादल मंडरा रहे थे। फ्रांस के उपनिवेश धीरे-धीरे हाथ से निकलते जा रहे थे। देश में गृह युद्ध की स्थिति थी। ऐसी स्थिति में डि गॉल को संविधान निर्माण का काम सौंपा गया।

3. लिखित संविधान :— तृतीय तथा चतुर्थ गणतंत्र के संविधान की तरह ही यह संविधान भी लिखित है। इसमें शासन के लगभग समस्त पक्षों की विवेचना की गयी है। 1946 ई० के संविधान से छोटा संविधान है। इसमें 15 अध्याय तथा 92 अनुच्छेद है। यह अपूर्ण तथा अस्पष्ट संविधान है।

4. धर्मनिरपेक्ष, प्रजातांत्रिक तथा सामाजिक गणराज्य :— वर्तमान संविधान के अनुच्छेद 2 के द्वारा फ्रांस को एक अविभाज्य धर्मनिरपेक्ष, प्राजातान्त्रिक तथा सामाजिक गणराज्य घोषित किया गया है। इसमें कानून के समक्ष सभी नागरिकों के लिए जन्म, जाति अथवा धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना समानता की व्यवस्था की गयी है और जनता द्वारा, जनता के लिए जनता का शासन उसका सिद्धान्त है।

5. राष्ट्रपति के शक्ति में वृद्धि :— पंचम गणतंत्र के संविधान की प्रमुख विशेषता राष्ट्रपति के शक्ति में क्रांतिकारी परिवर्तन है। इस संविधान में राष्ट्रपति के अधिकारों अप्रत्याशित वृद्धि की गयी है। राष्ट्रपति को व्यक्तिगत अधिकार दिए गये है जिसका प्रयोग वह स्वयं करता है। संविधान के अनुच्छेद 16 के अनुसार राष्ट्रपति को आपातकालीन शक्तियाँ दी गयी है, जिसका प्रयोग वह स्वयं करता है।

6. एकात्मक व्यवस्था :— अमेरिका तथा स्विट्जरलैण्ड से भिन्न लेकिन ब्रिटेन के समान एकात्मक व्यवस्था है। केन्द्रीय सरकार के पास सारी शक्तियाँ है। स्थानीय प्रशासन की खातिर देश मे प्रादेशिक क्षेत्र है जो छोटे-छोटे एककों में बटे हुए है किन्तु ये केन्द्र सरकार के अधीन है, उन्हे स्वायत्तता प्राप्त नहीं है। संसद के बनाये कानून से ये स्थानीय सरकारें अपनी शक्तियाँ प्राप्त करते है। यहां स्थानीय निकायों पर केन्द्र का नियंत्रण अधिक कठोर है। गृह विभाग का नियंत्रण इतना कठोर है कि बटन दबाते ही सारे तार पेरिस में बजने लगते है।

Scanned with CamScanner

7. शक्ति विभाजन :— पंचम गणतंत्र के संविधान में शक्ति विभाजन का सिद्धान्त लागू किया गया है। कार्यपालिका को विधान पालिका से पृथक करने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रपति का निर्वाचन संसद द्वारा न होकर एक निर्वाचक मण्डल द्वारा होता है। दूसरी तरफ मंत्रिमंडल को संसद के प्रति उत्तरदायी बनाया गया है। इस प्रकार इस संविधान के द्वारा शक्तियों का पूर्ण पृथक्करण कर दिया गया है।

8. द्विशासन प्रणाली :— पंचम गणतंत्र संविधान में द्विशासन प्रणाली की व्यवस्था की गई है। एक अंश को मुख्य भूमि के लिए और दूसरे अंश के समुदाय अर्थात उपनिवेशों के संगठन के लिए समुदाय का शासन संचालक व्यवस्था के समान है। इस व्यवस्था के द्वारा उपनिवेशों को सन्तुष्ट करने का प्रयास किया गया है।

9. संविधान सभा का अभाव :— पंचम गणतंत्र के संविधान निर्माण हेतु किसी संवैधानिक सभा का आयोजन नहीं हुआ। दि गॉल की सरकार ने कुछ विशेषज्ञों एवं परामर्शदात्री समिति की राय से संविधान का निर्माण किया। थोड़े दिनों के लिए संविधान के प्रारूप को संवैधानिक वाद-विवाद के लिए रखकर इस पर जनमत संग्रह ले लिया गया।

10. संसदीय तथा अध्यक्षात्मक प्रणालियों का मिश्रण :— पंचम गणतंत्र का संविधान संसदीय तथा अध्यक्षात्मक शासन प्रणालियों का मिश्रण है। कुछ क्षेत्रों में राष्ट्रपति को प्रधानमंत्री के अधिकार क्षेत्र से अलग रखा गया है, और कुछ क्षेत्रों में राष्ट्रपति को वास्तविक अधिकार प्रदान किए गए हैं। ब्रोगन के अनुसार "यह संविधान न तो अमेरिका की तरह अध्यक्षात्मक है और न ब्रिटेन की तरह संसदीय, बल्कि यह दोनों मिश्रण है।

अन्त में निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि फ्रांस के पंचम गणतन्त्र का संविधान पूर्व के संविधान से अच्छा है। पंचम गणतंत्र के संविधान ने सरकार को स्थायित्व प्रदान किया है। यह संविधान अन्तर्राष्ट्रीय कानून, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा अन्तर्राष्ट्रीय संधि को मान्यता देता है। इस दृष्टि से यह संविधान तृतीय तथा चतुर्थ गणतंत्र के संविधानों से निश्चित रूप से श्रेयस्कर है।

Scanned with CamScanner